असण्णिणो अण्णदरा णियमा देवा देवीओ संजदासंजदा✪ संजदा च उदीरेंति। दूभग-अणादेज्जाणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्माइट्ठि त्ति उदीरणा। सुस्सर-दुस्सराणं मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि बेइंदियो तेइंदियो चउरिंदियो पंचिंदियो वा भासापज्जत्तीए पज्जत्तयदो चेव उदीरेदि। तित्थ-यरणामाए तित्थयरो उप्पण्णकेवलणाणो सजोगी चेव उदीरगो।

उच्चागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव सजोगिकेवलिचरिमसमओ त्ति उदीरणा। णवरि मणुस्सो वा मणुस्सिणी वा सिया उदीरेदि, देवो देवी वा संजदो वा णियमा उदीरेंति, संजदासंजदो सिया उदीरेदि। णीचागोदस्स मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदस्स उदीरणा। णवरि देवेसु णत्थि उदीरणा, तिरिक्ख-णेरइएसु णियमा उदीरणा, मणुसेसु सिया उदीरणा♣। एवं सामित्तं समत्तं।

एयजीवेण कालो– आभिणिबोहियणाणावरणीयस्स उदीरओ अणादिओ अपज्जवसिदो, अणादिओ सपज्जवसिदो। एवं सेसचत्तारिणाणावरणीय-चत्तारिदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुभासुभ-णिमिण-पंचंतराइ-याणं दोहि भंगेहि कालपरूवणा कायव्वा। णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमुदीरणाए

जीव उसकी उदीरणा करते हैं; तथा देव व देवियां, संयतासंयत एवं संयत जीव नियमसे उसकी उदीरणा करते हैं। दुर्भग व अनादेयकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि तक होती है। सुस्वर और दुस्वरकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय जीव भाषापर्याप्तिसे पर्याप्त होकर ही उनकी उदीरणा करता है। तीर्थंकर नामकर्मका उदीरक जिसके केवलज्ञान उत्पन्न हो चुका है ऐसा सयोगी तीर्थंकर ही होता है।

उच्चगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर सयोगकेवलीके अन्तिम समय तक होती है। विशेष इतना है कि मनुष्य और मनुष्यनी उसकी कदाचित् उदीरणा करते हैं, देव-देवी तथा संयत जीव उसकी उदीरणा नियमसे करते हैं, तथा संयतासंयत जीव कदाचित् उदीरणा करते हैं। नीचगोत्रकी उदीरणा मिथ्यादृष्टिसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक होती है। विशेष इतना है कि देवोंमें उसकी उदीरणा सम्भव नहीं है, तिर्यंचों व नारकियोंमें उसकी उदीरणा नियमसे तथा मनुष्योंमें कदाचित् होती है। इस प्रकार स्वामित्व समाप्त हुआ।

एक जीवकी अपेक्षा काल– आभिनीबोधिकज्ञानावरणीयका उदीरक अनादि-अपर्यवसित और अनादि-सपर्यवसित जीव है। इसी प्रकारसे शेष चार ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इन प्रकृतियों (ध्रुवोदयी) के उदीरणाकालकी प्ररूपणा इन दो भंगोंसे करनी चाहिये। निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धिकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय है,

---

✪ देवो सुभग ए (इ) ज्जाण गब्भवक्कंतिओ य ...। क. प्र. ४, १६. ♣ उच्चं चिय जइ अमरा केई मणुया व नीयमेवण्णे। चउगइया दुभगाई तित्थयरो केवली तित्थं ॥ पं. सं. ४, १८.

कालो जहण्णेण एगसमओ। कुदो ? अधदुवोदयादो। उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं णिद्दा-पयलाणं पि वत्तव्वं। सादस्स जहण्णएण एयसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा। असादस्स जहण्णएण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि। कुदो? सत्तमपुढविपवेसादो पुव्वं पच्छा च असादस्स अंतोमुहुत्तमेत्तकालमुदीरणुवलंभादो।

हस्स-रदीणं कालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण छमासा। अरदि-सोगाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि। मिच्छ-त्तस्स तिण्णि भंगा– जो सो सादिओ सपज्जवसिदो तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। सम्मत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण छावट्ठिसागरोवमाणि आवलियूणाणि। सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण उक्कस्सेण वि अंतोमुहुत्तं। सम्मत्त-मिच्छ-त्तसम्मामिच्छत्ताणं जहण्णगो उदीरणकालो तुल्लो। सम्मामिच्छत्तस्स उक्कस्सउदीरण-कालो विसेसाहिओ। अणंताणुबंधिकोधस्स उदीरणकालो जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं माण-माय-लोभाणं पि वत्तव्वं। जहा अणंताणुबंधीणं तहा अपच्चक्खा-णचउक्क-पच्चक्खाणचउक्काणं पि वत्तव्वं। कोहसंजलणाए जहण्णेण एगसमओ, उक्क-स्सेण अंतोमुहुत्तं। एवं माण-माया-लोभसंजलणाणं वत्तव्वं। भय-दुगुंछाणं जहण्णेण

क्योंकि, ये अध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं। उनकी उदीरणाका काल उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इसी प्रकारसे निद्रा और प्रचला इन दो प्रकृतियोंके उदीरणाकाल कथन करना चाहिये। सातावेद-नीयकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। असातावेदनीयकी उदीरणाका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है, क्योंकि, सातवीं पृथिवीमें प्रवेश करनेसे पूर्व और पश्चात् अन्तर्मुहूर्त मात्र काल तक असातावेदनीयकी उदीरणा पायी जाती है।

हास्य व रतिका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे छह मास है। अरति और शोकका काल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षतः अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है। मिथ्यात्वके उदीरणाकालकी प्ररूपणामें तीन भंग हैं– उनमें जो सादि-सपर्यवसित है उसका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन है। सम्यक्त्व प्रकृतिका काल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे आवलीसे कम छयासठ सागरोपम प्रमाण है। सम्यग्मिथ्या-त्वका काल जघन्यसे और उत्कर्षसे भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है। सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और सम्यग्मि-थ्यात्व इन तीनों प्रकृतियोंका जघन्य उदीरणाकाल समान है। सम्यग्मिथ्यात्वका उत्कृष्ट उदीरणा-काल उससे विशेष अधिक है। अनन्तानुबन्धी क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त है। इसी प्रकारसे अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। जैसे अनन्तानुबन्धी कषायोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही अप्रत्याख्यानचतुष्क और प्रत्याख्यानचतुष्कके भी उदीरणकालकी प्ररूपणा करना चाहिये। संज्वलन क्रोधका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। इसी प्रकार संज्वलन मान, माया और लोभके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। भय और जुगुप्साका

एयसमओ उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । कधं भय-दुगुंछाणमुदीरणकालो एगसमओ ? अपुव्वकरणचरिमसमयम्मि पढमसमयवेदगो होदूण से काले अणियट्टिगुणं गदस्स उदीरणवोच्छेददंसणादो । णवुंसयवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जपोग्गलपरियट्टं । इत्थिवेदस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमसदपुधत्तं । पुरिसवेदस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं ।

णिरयाउअस्स जहण्णेण दसवाससहस्साणि आवलियाए ऊणाणि, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि आवलियाए ऊणाणि । एवं देवाउअस्स वि वत्तव्वं । मणुसाउअस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णिपलिदोवमाणि आवलियाए ऊणाणि । तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणमावलियाए ऊणं, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि आवलियाए ऊणाणि ।

णिरयगदिणामाए उदीरणा केवचिरं कालादो होदि ? जहण्णेण दसवाससहस्साणि, उक्कस्सेण तेत्तीससागरोवमाणि । एवं देवगदीए वि वत्तव्वं । तिरिक्खगदिणामाए मणुसगदिणामाए च जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण परिवाडीए अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं तिण्ण पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि । अजोगिवज्जा मणुसगदीए

उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

शंका— भय और जुगुप्साका उदीरणाकाल एक समय कैसे है ?

समाधान— कारण कि अपूर्वकरणके अन्तिम समयमें उनका एक समयके लिये वेदक होकर अनन्तर समयमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानको प्राप्त होनेपर उक्त प्रकृतियोंकी उदीरणाकी व्युच्छित्ति देखी जाती है ।

नपुंसकवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्त्रीवेदका जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। पुरुषवेदका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है।

नारकायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक आवली कम दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे आवली कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। इसी प्रकार देवायुके उदीरणाकालका भी कथन करना चाहिये। मनुष्यायुका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है। तिर्यंच आयुका उदीरणाकाल जघन्यसे आवली कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे आवली कम तीन पल्योपम प्रमाण है।

नरकगति नामकर्मकी उदीरणा कितने काल होती है ? उसकी उदीरणा जघन्यसे दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे तेतीस सागरोपम काल तक होती है । इसी प्रकारसे देवगतिके भी उदीरणाकालका कथन करना चाहिये । तिर्यंचगति नामकर्म और मनुष्यगति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे क्रमशः असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल तथा पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है । अयोगकेवलिको छोडकर शेष (सब मनुष्य व मनुष्यनी) मनुष्यगति नामकर्मके उदीरक हैं ।

उदीरणा। एइंदियजादिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण अणंतकालमसंखेज्जपोग्गलपरियट्टं। बीइंदिय-तीइंदिय-चउरिंदियजादीणं जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि। पंचिंदियजादिणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं, उक्कस्सेण सागरोवमसहस्सं पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियं। ओरालियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ। कुदो ? उत्तरसरीरं विउव्विय मूलसरीरं पविसिय एगसमयमोरालियसरीरमुदीरिय बिदियसमए कालं कादूण विग्गहं गदस्स तदुवलंभादो। उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। वेउव्वियसरीरणामाए जहण्णेण एगसमओ। कुदो ? तिरिक्खमणुस्सेसु एगसमयमुत्तरसरीरं विउव्विदूण बिदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि। आहारसरीरणामाए☼ जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। कुदो ? आहारसरीरमुट्ठावेंतस्स अपज्जत्तद्धाए मरणाभावादो। जहा तिण्णं सरीराणं तहा तेसिं अंगोवंगाणं पि वत्तव्वं। णवरि ओरालियसरीरंगोवंगणामस्स उक्कस्सेण✱ तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। जहा पंचण्णं सरीराणं तहा तेसिं बंधण-संघादाणं परूवणा कायव्वा।

समचउरससंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ। कुदो ? अणप्पिदसंठाणेण उत्तर-

एकेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन रूप अनन्त काल है। द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे संख्यात हजार वर्ष प्रमाण है। पंचेन्द्रियजाति नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षतः पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक हजार सागरोपम प्रमाण है। औदारिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर मूल शरीरमें प्रविष्ट होकर एक समय औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेके पश्चात् द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर जो विग्रहको प्राप्त हुआ है उसके उपर्युक्त काल पाया जाता है। उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। वैक्रियिकशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, तिर्यंचों या मनुष्योंमें एक समय उत्तर शरीरकी विक्रिया करके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है। उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है। आहारशरीर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है, क्योंकि, आहारशरीरको उत्पन्न करनेवाले जीवका अपर्याप्तकालमें मरण सम्भव नहीं है। जैसे इन तीन शरीरोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके अंगोपांगोंके भी उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये। विशेष इतना है कि औदारिकशरीरांगोपांगका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। जैसे पांच शरीरोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उनके बन्धन और संघातोंके उदीरणाकालकी भी प्ररूपणा करना चाहिये।

समचतुरस्रसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि,

---

☼ प्रत्योरुभयोरेव '-णामाणं' इति पाठः। ✱ काप्रतौ 'उक्कस्स' ताप्रतौ 'उक्कस्से०' इति पाठः।

सरीरं विउव्विय अप्पिदसंठाणमूलसरीरं पविट्ठबिदियसमए कालं काढूण संठाणंतरं गदस्स एगसमयकालुवलंभादो। उक्कस्सेण तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं। सेसाणं संठाणाणं हुंडसंठाणवज्जाणं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं, कम्मभूमि पंचिंदियतिरिक्ख-मणुस्से मोत्तूण अण्णत्थ सेससंठाणाणं संभवाभावादो। हुंडसंठाणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो ? विग्गहगदीए विणा हिंडमाणएइंदिय-विगलिंदिएसु संठाणंतराभावादो। अणंतकालो किण्ण परूविदो? ण, विग्गहगदीए✪ वट्टमाणाणं संठाणुदयाभावादो। तत्थ संठाणाभावे जीवाभावो किण्ण होदि ? ण, आणुपुव्विणिव्वत्तिदसंठाणे अवट्ठियस्स जीवस्स अभावविरोहादो। वज्जरिसहवइरणारायणसरीरसंघडणणामाए जहण्णेण एगसमओ, उत्तरसरीरादो मूलसरीरं गंतूण अप्पिदसंघडणेण❋ एगसमयं परिणमिय बिदियसमए मुदस्स तदुवलंभादो। उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। सेसाणं संघडणाणं पंचण्णं पि जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पुव्वकोडिपुधत्तं।

अविवक्षित संस्थानके साथ उत्तर शरीरकी विक्रिया करके विवक्षित संस्थानवाले मूल शरीरमें प्रविष्ट होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त होकर संस्थानान्तरको प्राप्त हुए जीवके एक समय मात्र काल पाया जाता है। उसका उत्कृष्ट उदीरणाकाल साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। हुण्डकसंस्थानको छोडकर शेष चार संस्थानोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व मात्र है, क्योंकि, कर्मभूमिज पंचेन्द्रिय तिर्यंचों और मनुष्योंको छोडकर अन्यत्र शेष संस्थानोंकी सम्भावना नहीं है। हुण्डकसंस्थान नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग मात्र है, क्योंकि, विग्रहगतिके विना परि-भ्रमण करनेवाले एकेन्द्रियों व विकलेन्द्रियोंमें अन्य संस्थानकी सम्भावना नहीं है।

शंका— अनन्तकालकी प्ररूपणा क्यों नहीं की ?

समाधान—नहीं, क्योंकि, विग्रहगतिमें रहनेवाले जीवोंके संस्थानका उदय सम्भव नहीं है।

शंका— विग्रहगतिमें संस्थानके अभावमें जीवका अभाव क्यों नहीं हो जाता ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, वहां आनुपूर्वीके द्वारा रचे गये संस्थानमें अवस्थित जीवके अभावका विरोध है।

वज्रर्षभनाराचशरीरसंहनन नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरसे मूल शरीरको प्राप्त होकर विवक्षित संहननसे एक समय परिणत होकर द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है। उसका उदीरणाकाल उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक तीन पल्योपम प्रमाण है। शेष पांचों ही संहननोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समम और उत्कर्षसे पूर्वकोटिपृथक्त्व प्रमाण है।

✪ ताप्रतौ 'विग्गहगदीसु' इति पाठः। ❋ प्रत्योरुभयोरेव 'संघादणेण' इति पाठः।

णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण बे समया। एवं मणुसगइ-देवगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं✡ वत्तव्वं। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वि-णामाए जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया। उवघादणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। परघादणामाए जहण्णेण एग-समओ, उत्तरसरीरं विउव्विय पज्जत्तयदबिदियसमए मुदस्स एगसमओ लब्भदे। उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि देसूणाणि। जहा परघादणामाए परूविदं तहा उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइसुस्सर-दुस्सराणं परूवेयव्वं।

आदावणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बावीसवस्ससहस्साणि देसूणाणि, सरी-रपज्जत्तीए अपज्जत्तयस्स आदावुदयाभावादो। उज्जोवणामाए❋ जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि पलिदोवमाणि देसूणाणि। तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि सादिरेयाणि। थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्त–पत्तेय–साधारणाणं जहण्णगो उदीरणकालो अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सओ थावरणामाए असंखेज्जपो-ग्गलपरियट्टा, बादरणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, सुहुमणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए बेसागरोवमसहस्साणि, अपज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, पत्तेय-साहारणाणं

नरकगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे दो समय मात्र है। इसी प्रकार मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी और देवगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नाम–कर्मोंके उदीरणाकालका कथन करना चाहिये। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है। उपघात नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। परघात नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया कर पर्याप्त होनेके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके एक समय काल पाया जाता है। उसका उदीरणा–काल उत्कर्षसे कुछ कम तेतीस सागरोपम प्रमाण है। जैसे परघात नामकर्मके उदीरणाकालकी प्ररूपणा की गई है वैसे ही उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंके उदीरणाकालकी प्ररूपणा करना चाहिये।

आतप नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम बाईस हजार वर्ष प्रमाण है, क्योंकि, शरीरपर्याप्तिसे अपर्याप्त जीवके आतप नामकर्मका उदय सम्भव नहीं है। उद्योत नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम तीन पल्य प्रमाण है। त्रस नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे साधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है। स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रत्येक और साधारण नामकर्मोंका उदीरणाकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। उत्कृष्ट उदीरणाकाल स्थावर नामकर्मका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन, बादर नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, सूक्ष्म नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका दो हजार सागरोपम, अपर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रत्येक व

✡ उभयोरेव प्रत्योः 'मणुसगइ-देवगइणामाणं' इति पाठः। ❋ उभयोरेव प्रत्योः 'उज्जोवणामाणं' इति पाठः।

अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। जसगित्ति-सुभगादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ उत्तर-विउव्वणाए कालं करेंतस्स, उक्कस्सेण सागरोवम☼सदपुधत्तं। अजसगित्ति-दूभग-अ-णादेज्जणामाणं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण अजसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, दूभग-अणादेज्जाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। कधमेगसमओ ? अजसकित्तिमुदीरयमाणो संजदो जादो, ताधे जसगित्ती उदयमागदा▣, पुणो अंतोमुहुत्तेण सासणं गदो, तत्थ अज-सगित्तीए उदीरणाबिदियसमए मुदो, तस्स एगसमओ लब्भइ। उत्तरविउव्वणाए वि लब्भदे। एवं दूभग-अणादेज्जाणं पि वत्तव्वं, परियट्टमाणउदयत्तादो।

तित्थयरणामाए जहण्णेण वासपुधत्त, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा। णीचागोदस्स जहण्णेण एगसमओ, उच्चागोदादो णीचागोदं गंतूण तत्थ एगसमयमच्छिय बिदियसमए उच्चागोदे उदयमागदे एगसमओ लब्भदे। उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। उच्चागोदस्स जहण्णेण एयसमओ, उत्तरसरीरं विउव्विय ✻ एगसमएण मुदस्स तदुव-लंभादो। एवं णीचागोदस्स वि। उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं। एवमोघाणुगमो

साधारण नामकर्मोंका अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। यशकीर्ति, सुभग और आदेय नामकर्मोंका उदीरणाकाल उत्तर विक्रियासे मृत्युको प्राप्त होनेवाले जीवके जघन्यसे एक समय मात्र है, उत्कर्षसे वह सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेय नाम-कर्मोंका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है। उत्कर्षसे वह अयशकीर्तिका असंख्यात लोक तथा दुर्भग व अनादेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

शंका—- इनका जघन्य उदीरणाकाल एक समय मात्र कैसे है ?

समाधान—- अयशकीर्तिकी उदीरणा करनेवाला जीव संयत हो गया, उस समय उसके यशकीर्तिका उदय हुआ, फिर वह अन्तर्मुहूर्तमें सासादन गुणस्थानको प्राप्त हुआ, वहां अयशकीर्तिकी उदीरणाके द्वितीय समयमें मृत्युको प्राप्त हुआ, उसके अयशकीर्तिका उदीरणा-काल एक समय पाया जाता है। यह काल उत्तर विक्रियासे भी पाया जाता है। इसी प्रकार दुर्भग व अनादेय नामकर्मोंके भी एक समयरूप उदीरणाकालका कथन करना चाहिये, क्योंकि, ये परिवर्तमान उदयवाली प्रकृतियां हैं।

तीर्थंकर नामकर्मका उदीरणाकाल जघन्यसे वर्षपृथक्त्व और उत्कर्षसे कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है। नीचगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उच्चगोत्रसे नीचगोत्रको प्राप्त होकर वहां एक समय रहकर द्वितीय समयमें उच्चगोत्रका उदय होनेपर एक समय उदीरणाकाल पाया जाता है। उत्कर्षसे वह असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। उच्चगोत्रका उदीरणाकाल जघन्यसे एक समय मात्र है, क्योंकि, उत्तर शरीरकी विक्रिया करके एक समयमें मृत्युको प्राप्त हुए जीवके उक्त काल पाया जाता है। नीचगोत्रका भी जघन्य काल एक समय मात्र इसी प्रकारसे घटित होता है। उच्चगोत्रका उत्कृष्ट काल सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण

☼ मप्रतिपाठोऽयम्, का-ताप्रत्योः 'एगसमओ उक्क० उत्तरविउव्वणाए काल करेंतस्स सागरोवम' इति पाठः। ▣ प्रत्योरुभयोरेव 'उदयमागदो' इति पाठः। ✻ काप्रतौ 'विउव्विद' इति पाठः।

समत्तो । आदेसो जाणियूण वत्तव्वो । एवं कालो समत्तो ।

एयजीवेण अंतरं--पंचणाणावरणीय-चदुदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह--णिमिण-पंचंतराइयाणमुदीरणाए अंतरं णत्थि, धुवोदयत्तादो । णिद्दा-पयलाणमंतरं जहण्णमुक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं । णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि साहियाणि अंतोमुहुत्तेण । सादस्स जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तेत्तीसं सागरोवमाणि सादिरेयाणि । सादस्स गदियाणुवादेण जहण्णमंतरमंतोमुहुत्तं, उक्कस्सं पि अंतोमुहुत्तं चेव । असादस्स जहण्णमंतरमेगसमओ, उक्कस्सेण छम्मासा । मणुसगदीए असादस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । मिच्छत्तस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं देसूणं । अणंताणुबंधीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेछावट्ठिसागरोवमाणि सादिरेयाणि । अपच्चक्खाणकसायाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पुव्वकोडी देसूणा । एवं चेव पच्चक्खाणावरणीयचदुक्कस्स वत्तव्वं । कोह-माण-मायासंजलणाणं

है । इस प्रकार ओघानुगम समाप्त हुआ । आदेशका कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार काल समाप्त हुआ ।

एक जीवकी अपेक्षा अन्तर--पांच ज्ञानावरणीय, चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय; इनकी उदीरणाका अन्तर नहीं होता, क्योंकि, ये ध्रुवोदयी प्रकृतियां हैं । निद्रा और प्रचलाकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है । निद्रानिद्रा, प्रचला-प्रचला और स्त्यानगृद्धिका वह अन्तरकाल जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अन्वर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे साधिक तेतीस सागरोपम प्रमाण है । गतिके अनुवादसे सातावेदनीयकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्य व उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त ही है । असातावेदनीयका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट छह मास प्रमाण है । मनुष्यगतिमें असाताकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ।

मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणा-अन्तरकाल अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम प्रमाण है। सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका वह अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे कुछ कम उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । अनन्तानुबन्धी कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट साधिक दो छयासठ सागरोपम काल प्रमाण है । अप्रत्याख्यान कषायोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट कुछ कम पूर्वकोटि प्रमाण है। इसी प्रकार ही प्रत्याख्याना-वरणीयचतुष्कके अन्तरका कथन करना चाहिये । संज्वलन क्रोध, मान और मायाका जघन्य

जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पि अंतोमुहुत्तं। लोहसंजलणाए✽ जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। जहा सादस्स तहा हस्स-रदीणं वत्तव्वं। जहा असादस्स तहा अरदि-सोगाणं वत्तव्वं। भय-दुगुंछाणमंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं। कध एगसमओ? चरिमसमयणियट्टिभयवेदगो⊗ से काले अणियट्टिगुणं पविट्ठो अवेदगो जादो, तदो से काले मदो देवो जादो भयं चेव वेदेदि, एवं भयवेदगस्स एगसमयमंतरं। एवं दुगुंछाए। पुरिसवेदस्स❋ उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। इत्थि-णवुंसयवेदाणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सं णवुंसयवेदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, इत्थिवेदस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

देव-णिरयाउआणमुदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिरिक्खाउअस्स जहण्णेण अन्तरमावलिया, उक्कस्सेण सागरोवमसदपुधत्तं। एवं मणुस्साउअस्स वि। णवरि उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट भी अन्तर्मुहूर्त मात्र है। संज्वलन लोभका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। जिस प्रकार साता वेदनीयके अन्तरकी प्ररूपणा की गई है उसी प्रकारसे हास्य व रतिके अन्तरकी प्ररूपणा करनी चाहिये। जिस प्रकार असातावेदनीयके अन्तरका कथन किया है उसी प्रकारसे अरति और शोकके अन्तरका कथन करना चाहिये। भय और जुगुप्साका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है।

शंका–– उनकी उदीरणाका जघन्य अन्तरकाल एक समय कैसे है?

समाधान–– भयका वेदक अन्तिम समयवर्ती अपूर्वकरण अनन्तर समयमें अनिवृत्तिकरण गुणस्थानमें प्रविष्ट होकर उसका अवेदक हुआ। पश्चात् अनन्तर समयमें मृत्युको प्राप्त होकर देव हुआ। वह उस समय भयका ही वेदन करता है। इस प्रकारसे भयका वेदन करनेवाले उक्त जीवके एक समय अन्तर पाया जाता है। इसी प्रकार जुगुप्साके भी उपर्युक्त एक समय मात्र अन्तरका कथन करना चाहिये।

पुरुषवेदकी उदीरणाका अन्तर जघन्य एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्त्री और नपुंसक वेदोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है। उत्कृष्ट अन्तर नपुंसकवेदका सागरोपमशतपृथक्त्व और स्त्रीवेदका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

देव व नारक आयुओंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन है। तिर्यंच आयुका अन्तर जघन्यसे एक आवली और उत्कर्षसे सागरोपमशतपृथक्त्व प्रमाण है। इसी प्रकारसे मनुष्यायुके भी अन्तरका कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि उसका उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

✽ प्रत्योरुभयोरेव 'लोहसंजलणाणं' इति पाठः। ⊗ प्रत्योरुभयोरेव 'अणियट्टिभयवेदगो' त्ति पाठः। ❋ काप्रतौ 'पुरिसवेदयस्स' इति पाठः।

चदुण्णं पि गदीणमंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं। उक्कस्सेण तिरिक्खगइणामाए सागरोवमसदपुधत्तं, सेसाणं गईणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। ओरालिय-वेउव्वियसरीराणमुदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ। उक्कस्सेण ओरालियसरीरस्स तेत्तीसं सागरोवमाणि अंतोमुहुत्तब्भहियाणि वेउव्वियसरीरस्स असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। अहारसरीरस्स जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण उवड्ढपोग्गलपरियट्टं। अण्णदरस्स संठाणस्स जहण्णमंतरं एगसमओ उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। णवरि हुंडसंठाणस्स तेवट्ठि-सागरोवमसदं सादिरेयं। एइंदियजादीए जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण बेसागरोवमसहस्साणि पुव्वकोडिपुधत्तेणब्भहियाणि। सेसाणं जादीणं जहण्णमंतरं अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिण्णमंगोवंगाणं सग-सगसरीराणं व जहण्णुक्कस्संतरं वत्तव्वं। णवरि ओरालियअंगोवंगस्स वेउव्वियभंगो। पंचसरीरबंधण-संघादाणं पंचसरीरभंगो। छण्णं संघडणाणं जहण्णमंतरं एगसमओ, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

देवगइ-णिरयगइपाओग्गाणुपुव्विणामाणं जहण्णेण दसवाससहस्साणि साहियाणि, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। तिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं तिसमऊणं, उक्कस्सेण अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो। मणुसगइपाओग्गाणुपुव्विणामाए जहण्णेण खुद्दाभवग्गहणं दुसमऊणं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा।

चारों गतियोंका उक्त अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त है। उत्कर्षसे वह तिर्यंचगतिका सागरोपमशतपृथक्त्व और शेष गतियोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। औदारिक और वैक्रियिक शरीरोंका उदीरणा-अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे वह औदारिकशरीरका अन्तर्मुहूर्तसे अधिक तेतीस सागरोपम और वैक्रियिकशरीरका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। आहारकशरीरका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट उपार्ध पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। अन्यतर संस्थानका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। विशेष इतना है कि हुण्डकसंस्थानका उत्कृष्ट अन्तर साधिक एक सौ तिरेसठ सागरोपम प्रमाण है। एकेन्द्रिय जातिका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटिपृथक्त्वसे अधिक दो हजार सागरोपम प्रमाण है। शेष जातियोंका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। तीन अंगोपांग नामकर्मोंके जघन्य व उत्कृष्ट अन्तरका कथन अपने अपने शरीरोंके समान करना चाहिये। विशेष इतना है कि औदारिक अंगोपांगके अन्तरकी प्ररूपणा वैक्रियिकशरीरके समान है। पांच शरीरबन्धनों और पांच संघातोंके अन्तरकी प्ररूपणा पांच शरीरोंके समान है। छह संहननोंका जघन्य अन्तर एक समय और उत्कृष्ट असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है।

देवगति और नरकगति प्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंका अन्तर जघन्यसे साधिक दस हजार वर्ष और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। तिर्यग्गतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मोंका अन्तर जघन्यसे तीन समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे अंगुलके असंख्यातवें भाग प्रमाण है। मनुष्यगतिप्रायोग्यानुपूर्वी नामकर्मका अन्तर जघन्यसे दो समय कम क्षुद्रभवग्रहण और उत्कर्षसे

उवघादणामाए उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण तिण्णि समया । परघाद-उस्सास-पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर-दुस्सराणमुदीरणंतरं जहण्णमंतोमुहुत्तं केवलिसमुग्घादं पडुच्च पंचसमया । उक्कस्सेण परघादुस्सासाणमंतोमुहुत्तं पसत्थापसत्थविहायगइ-सुस्सर--दुस्सराणमसंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । आदावु-ज्जोवाणं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण अणंतकालं✱ । तसणामाए जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा । थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्त-अपज्जत्ताणं उदीरणंतरं जहण्णेण अंतोमुहुत्तं । उक्कस्सेण थावरणामाए तसट्ठिदि✪, सुहुमणामाए अंगुलस्स असंखेज्जदिभागो, बादरणामाए असंखेज्जा लोगा, पज्जत्तणामाए अंतोमुहुत्तं, अपज्जत्तणामाए तसपज्जत्तट्ठिदी । पत्तेयसाहारणाणं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण पत्तेयसरीरणामाए णिगोदट्ठिदी, साहारणसरीर-णामाए असंखेज्जा लोगा । जसगित्ति-अजसगित्ति-सुभग-दुभग-आदेज्ज-अणादेज्जाण-मंतरं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण जसगित्तीए असंखेज्जा लोगा, सुभग-आदेज्जाणं असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा, अजसगित्ति-दूभग-अणादेज्जाणं सागरोवमसदपुधत्तं । तित्थ-यरणामाए णत्थि अंतरं । उच्चाणीचागोदाणं जहण्णेण एगसमओ । उक्कस्सेण णीचा-

---

असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण हैं। उपघात नामकर्मकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे तीन समय प्रमाण है। परघात, उच्छ्वास, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंकी उदीरणाका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त, मात्र है, केवलिसमुद्घातकी अपेक्षा वह पांच समय प्रमाण है । उत्कर्षसे वह परघात व उच्छ्वासका अन्तर्मुहूर्त, तथा प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगतियों, सुस्वर और दुस्वर नामकर्मोंका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है । आतप व उद्योतका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे अनन्त काल प्रमाण है। त्रस नाम-कर्मका जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त और अपर्याप्त नामकर्मोंकी उदीरणाका अन्तर जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त मात्र है। उत्कर्षसे वह स्थावर नामकर्मका त्रसस्थिति (साधिक दो हजार सागरोपम), सूक्ष्म नामकर्मका अंगुलके असंख्यातवें भाग, बादर नामकर्मका असंख्यात लोक, पर्याप्त नामकर्मका अन्तर्मुहूर्त, तथा अपर्याप्त नामकर्मका त्रस पर्याप्तकी स्थिति प्रमाण है । प्रत्येक और साधारणका अन्तर जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह प्रत्येकशरीर नामकर्मका निगोदस्थिति प्रमाण तथा साधारणशरीर नामकर्मका असंख्यात लोक प्रमाण है । यशकीर्ति, अयशकीर्ति, सुभग, दुर्भग, आदेय और अनादेयका अन्तर जघन्यसे एक समय है । उत्कर्षसे वह यशकीर्तिका असंख्यात लोक, सुभग व आदेयका असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन; तथा अयशकीर्ति, दुर्भग और अनादेयका सागरोपम-शतपृथक्त्व प्रमाण है तीर्थंकर प्रकृतिकी उदीरणाका अन्तर सम्भव नहीं है। ऊंच व नीच गोत्रोंका अन्तर जघन्यसे एक समय है। उत्कर्षसे नीच गोत्रकी उदीरणाका वह अन्तर सागरोपम

✱ प्रत्योरुभयोरेव ' अणंता लोगा ' इति पाठः । ✪ काप्रतिगतोऽयम् । ताम्रप्रत्योः ' तस्स ट्ठिदी ' इति पाठः ।

गोदस्स सागरोवमसदपुधत्तं, उच्चागोदस्स उदीरणंतरमुक्कस्सेण असंखेज्जा पोग्गलपरियट्टा। एवमेगजीवेण अंतरं समत्तं।

णाणाजीवेहि भंगविचओ वुच्चदे। तत्थ अट्ठपदं-- जेसिं कम्ममत्थि तेसु पयदं, अकम्मेहि ✿ अव्ववहारो। एदेण अट्ठपदेण पंचण्णं णाणावरणीयाणं सिया सव्वे जीवा उदीरया, सिया उदीरया च अणुदीरयो च, सिया उदीरया च अणुदीरया च। एवं तिण्णि भंगा। चदुदंसणावरणीय-तेजा-कम्मइयसरीर-वण्ण-गंध-रस-फास-अगुरुअलहुअ-थिराथिर-सुहासुह-णिमिण-पंचंतराइयाणं णाणावरणभंगो। णिद्दादीणं पंचण्णं पि उदीरया च अणुदीरया च णियमा अत्थि। णिरयगइ-देवगईसु णिद्दा-पयलाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, सिया अणुदीरया च उदीरओ च, सिया अणुदीरया च उदीरया च। सव्वे जीवा सादस्स असादस्स च णियमा उदीरया च अणुदीरया च। णेरइएसु सादस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया✽ च उदीरगो च, अणुदीरया च उदीरया च। णेरइयवज्जा जे पमत्ता❀ तसा ते सादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरगो च, उदीरया च अणुदीरया च। णेरइया असादस्स सिया सव्वे उदीरया, उदीरया च अणुदीरओ च, उदीरया च अणुदीरया च। णेरइयवज्जा सेसा जे पमत्ता❀ तसा ते

शतपृथक्त्व तथा ऊंच गोत्रकी उदीरणाका अन्तर असंख्यात पुद्गलपरिवर्तन प्रमाण है। इस प्रकार एक जीवकी अपेक्षा अन्तर समाप्त हुआ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचयकी प्ररूपणा करते हैं। उसमें अर्थपद-- जिन जीवोंके कर्मका अस्तित्व है वे प्रकृत हैं, कर्मरहित जीवोंसे व्यवहार नहीं है। इस अर्थपदसे पांच ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके कदाचित् सब जीव उदीरक, कदाचित् बहुत उदीरक व एक अनुदीरक, तथा कदाचित् बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी, इस प्रकारसे तीन भंग हैं। चार दर्शनावरणीय, तैजस व कार्मण शरीर, वर्ण, गन्ध, रस, स्पर्श, अगुरुलघु, स्थिर, अस्थिर, शुभ, अशुभ, निर्माण और पांच अन्तराय, इन कर्मोंकी प्ररूपणा ज्ञानावरणके समान है। निद्रा आदि पांचोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक हैं। नरकगति और देवगतिमें निद्रा और प्रचलाके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, कदाचित् बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा कदाचित् बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं। साता व असाता वेदनीयके नियमसे सब जीव उदीरक और अनुदीरक हैं। नारक जीवोंमें सातावेदनीयके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, (कदाचित्) अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा (कदाचित्) अनुदीरक बहुत और उदीरक भी बहुत होते हैं। नारकियोंको छोडकर जो प्रमत्त (प्रमाद युक्त) त्रस जीव हैं वे सातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत अनुदीरक भी होते हैं। नारकी जीव असातावेदनीयके कदाचित् सब उदीरक, उदीरक बहुत व अनुदीरक एक, तथा उदीरक बहुत व अनुदीरक भी बहुत होते हैं। नारकियोंको छोडकर शेष जो प्रमत्त (प्रमाद

✿ काप्रतौ 'अक्कमेहि' इति पाठः। ✽ काप्रतौ 'अणुदीरया च अणुदीरया' इति पाठः।
❀ ताप्रतौ 'पम- (ज्ज, त्ता' इति पाठः।

असादस्स सिया सव्वे अणुदीरया, अणुदीरया❀ च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया✽ च ।

सम्मामिच्छत्तस्स सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च । एवमेत्थ तिण्णि भंगा वत्तव्वा । सेससत्तावीसमोहपयडीणं णियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि । एवं सव्वेसिमाउआणं । णवरि देव-णिरयाउआणं✿ अणुदीरया भयणिज्जा । णामस्स परियत्तमाणपयडीणमाहारसरीर-आणुपुव्वितियवज्जाणं सव्वजीवा णियमा उदीरया च अणुदीरया च अत्थि । आहार-आणुपुव्वितियाणं सिया सव्वे जीवा अणुदीरया, अणुदीरया च उदीरओ च, अणुदीरया च उदीरया च । एवं तिण्णि भंगा । उच्चा-णीचागोदाणं णियमा उदीरया च अणुदीरया च । एवं णाणाजीवेहि भंगविचओ समत्तो ।

णाणाजीवेहि कालो वुच्चदे— आहारसरीर-आणुपुव्वितिय-सम्मामिच्छत्तं मोत्तूण सेससव्वकम्माणं उदीरया सव्वद्धं । आहारसरीरस्स उदीरआ⊗ जहण्णुक्कस्सेण अंतोमुहुत्तं । आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण आवलियाए असंखेज्जदिभागो । सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णेण अंतोमुहुत्तं, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ।

सहित) त्रस जीव हैं वे असातावेदनीयके कदाचित् सब अनुदीरक, बहुत अनुदीरक व एक उदीरक, तथा बहुत अनुदीरक व बहुत उदीरक भी होते हैं ।

सम्यग्मिथ्यात्वके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं । इस प्रकारसे यहां तीन भंगोंको कहना चाहिये । शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी हैं । इसी प्रकार सब आयुओंके विषयमें कथन करना चाहिये । विशेष इतना है कि देवायु और नार–कायुके अनुदीरक भजनीय हैं । आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंको छोडकर नामकर्मकी शेष परिवर्तमान प्रकृतियोंके सब जीव नियमसे उदीरक और अनुदीरक भी हैं । आहारकशरीर और तीन आनुपूर्वियोंके कदाचित् सब जीव अनुदीरक, अनुदीरक बहुत व उदीरक एक, तथा अनुदीरक बहुत व उदीरक भी बहुत होते हैं । इस प्रकारसे तीन भंग हैं । ऊंच व नीच गोत्रोंके नियमसे बहुत उदीरक और बहुत अनुदीरक भी होते हैं । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा भंगविचय समाप्त हुआ ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा की जाती है– आहारकशरीर, तीव आनुपूर्वी और सम्यग्मिथ्यात्वको छोडकर शेष सब कर्मोंके उदीरक सब काल रहते हैं । आहारकशरीरके उदीरक जघन्य व उत्कर्षसे अन्तर्मुहूर्त काल रहते हैं । तीन आनुपूर्वियोंके उदीरक जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे आवलीके असंख्यातवें भाग काल तक रहते हैं । सम्यग्मिथ्यात्वके उदीरक जघन्यसे अन्तर्मुहूर्त और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग तक रहते हैं । नाना जीवोंकी

❀ काप्रतौ ' अणुदीरया ' इति पाठः । ✽ काप्रतौ ' उदीरिया ' इति पाठः ।

✿ काप्रतौ ' देवणिरयाउआ ' इति पाठः । ⊗ काप्रतौ ' उदीरअ ', ताप्रतौ ' उदीरओ ' इति पाठः ।

णाणाजीवेहि सम्मामिच्छत्तस्स जहण्णओ उदीरणकालो थोवो, तस्सेव दव्वमसंखेज्जगुणं' तस्सेव उक्कस्सओ उदीरणकालो असंखेज्जगुणो । सम्मामिच्छत्तस्स उदीरणाए णाणाजीवेहि उक्कस्सओ विरहकालो असंखेज्जगुणो । एवं णाणाजीवेहि कालो समत्तो ।

णाणाजीवेहि अंतरं वुच्चदे-- सम्मामिच्छत्तस्स अंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो । आहारसरीरस्स उदीरणंतरं जहण्णेण एगसमओ, उक्कस्सेण संखेज्जाणि वस्साणि । आणुपुव्वितियस्स जहण्णेण एयसमओ, उक्कस्सेण चउवीसमुहुत्ता । सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं । एवमंतरं समत्तं ।

सण्णियासो दुविहो-- सत्थाणसण्णियासो परत्थाणसण्णियासो चेदि । सत्थाणसण्णियासे पयदं-- मदिणाणावरणमुदीरेंतो सेसणाणावरणीयाणि णियमा उदीरेदि । एवं पुध पुध सेसपयडीणं वत्तव्वं । चक्खुदंसणावरणीयमुदीरेंतो अचक्खु-ओहिकेवलदंसणावरणीयाणं✡ णियमा उदीरओ । सेसपंचण्णं पयडीणं सिया उदीरओ । एवमचक्खुदंसणावरणीय-ओहिदंसणावरणीय-केवलदंसणावरणीयाणं वत्तव्वं । णिद्दमुदीरेंतो हेट्ठिमाणं चदुण्णं पयडीणं णियमा उदीरओ, सेसाणमुवरिमाणं णियमा अणुदीरओ । एवं पयलाए णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं पुध पुध वत्तव्वं ।

अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वका जघन्य उदीरणाकाल स्तोक है । उसीका द्रव्य असंख्यातगुणा है । उसीका उत्कृष्ट उदीरणाकाल असंख्यातगुणा है । नाना जीवोंकी अपेक्षा सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणाका उत्कृष्ट विरहकाल असंख्यातगुणा है । इस प्रकार नाना जीवोंकी अपेक्षा कालकी प्ररूपणा समाप्त हुई ।

नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तरका कथन किया जाता है-- सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे पल्योपमके असंख्यातवें भाग प्रमाण है । आहारकशरीरकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे संख्यात वर्ष प्रमाण है । तीन आनुपूर्वियोंकी उदीरणाका अन्तरकाल जघन्यसे एक समय और उत्कर्षसे चौबीस मुहूर्त प्रमाण है । शेष कर्मोंकी उदीरणाका अन्तरकाल सम्भव नहीं है । इस प्रकार अन्तर समाप्त हुआ ।

संनिकर्ष दो प्रकार है-- स्वस्थान संनिकर्ष और परस्थान संनिकर्ष । यहां स्वस्थान संनिकर्ष प्रकृत है-- मतिज्ञानावरणीयकी उदीरणा करनेवाला शेष ज्ञानावरणीयोंकी नियमसे उदीरणा करता है । इसी प्रकार पृथक् पृथक् शेष चार ज्ञानावरणीय प्रकृतियोंके आश्रयसे संनिकर्षका कथन करना चाहिये । चक्षुदर्शनावरणीयकी उदीरणा करनेवाला अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणका नियमसे उदीरक होता है । शेष पांच दर्शनावरण प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकारसे अचक्षुदर्शनावरण, अवधिदर्शनावरण और केवलदर्शनावरणके आश्रयसे संनिकर्षकी प्ररूपणा करना चाहिये । निद्राकी उदीरणा करनेवाला पिछली चार प्रकृतियोंका नियमसे उदीरक और शेष आगेकी प्रकृतियोंका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार प्रचला, निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि प्रकृतियोंका आश्रय करके अलग अलग संनिकर्षका कथन करना चाहिये ।

✡ प्रत्योरुभयोरेव 'दंसणावरणीय' इति पाठः ।

सादमुदीरेंतो असादस्स अणुदीरओ, असादमुदीरेंतो सादस्स अणुदीरओ। मिच्छत्तं उदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ, अणंताणुबंधिस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, संजोजिदअणंताणुबंधीणमावलियामेत्तकालमुदीरणा-भावादो। जदि उदीरओ कोह-माण-माया-लोहाणं सिया उदीरगो। अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणकसायाणं णियमा उदीरओ। एदेसिं बारसण्हं कसायाणं एक्केक्कं पडुच्च सिया उदीरगो। तिण्णिवेद-हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स वेदस्स हस्स-रदि-अरदि-सोगजुगलेसु एक्कदरस्स जुगलस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

सम्मत्तमुदीरेंतो मिच्छत्त-सम्मामिच्छत्ताणं अणंताणुबंधीणं च णियमा अणु-दीरगो, अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ अट्ठण्णं कसायाणं सिया उदीरओ। संजलणस्स णियमा उदीरओ, तस्सेव चदुण्णं कसायाणं सिया उदीरगो। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

सम्मामिच्छत्तमुदीरेंतो सम्मत्त-मिच्छत्त-अणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरगो।

सातावेदनीयकी उदीरणा करनेवाला असाताका अनुदीरक और असाताकी उदीरणा करनेवाला साताका अनुदीरक होता है। मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक तथा अनन्तानुबन्धीका कदाचित् उदीरक और कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, अनन्तानुबन्धी कषायोंका संयोग हो जानेपर संयोगके समयसे लेकर आवली मात्र काल तक उदीरणा सम्भव नहीं है। यदि उनका उदीरक होता है तो क्रोध, मान, माया और लोभका कदाचित् उदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान, व संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। फिर भी इन बारह कषायोंमें एक एककी अपेक्षा कर कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेद, हास्य, रति, अरति और शोकका कदाचित् उदीरक होता है। परंतु तीन वेदों-मेंसे किसी एक वेदका एवं हास्य-रति और अरति-शोक इन युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। वह भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है।

सम्यक्त्व प्रकृतिकी उदीरणा करनेवाला मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व व अनन्तानुबन्धियोंका नियमसे अनुदीरक होता है। परन्तु अप्रत्याख्यान व प्रत्याख्यान कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। यदि वह उनका उदीरक है तो आठ कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। संज्व-लनका नियमसे उदीरक होता है। किन्तु वह उसीकी (संज्वलन) चार कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, किन्तु इन्हीं तीनों वेदोमेंसे किसी एक वेदका नियमसे उदीरक होता है। हास्य, रति, अरति और शोकका वह कदाचित् उदीरक होता है; किन्तु इन दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय व जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है

सम्यग्मिथ्यात्वकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व, मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी कषायोंका

अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-संजलणक✿सायाणं णियमा उदीरओ, तेसिं बारसण्णं पयडीणं सिया उदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणं एक्कदरस्स णियमा उदीरगो। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्क-दरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ।

अणंताणुबंधिकोधमुदीरेंतो सम्मत्त-सम्मामिच्छत्ताणमणुदीरओ। मिच्छत्तस्स सिया उदीरओ सिया अणुदीरओ, उदयावलियं पविट्ठमिच्छत्तपढमट्ठिदि-मिच्छाइट्ठिस्स सासणस्स च उदयाभावादो। अपच्चक्खाण-पच्चक्खाण-सजलणाणं तिण्णं कोहाणं णियमा उदीरओ, सेसाणं बारसण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरगो, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ। दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवमणंताणुबंधिमाण-माया लोहाणं वत्तव्वं। णवरि माणे उदीरिज्जमाणे चदुण्णं माणाणं, मायाए उदीरिज्जमाणाए चदुण्णं मायाणं, लोभे उदीरिज्जमाणे चदुण्णं लोभाणं णियमा उदीरणा होदि त्ति वत्तव्वं।

अपच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरेंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि।

नियमसे अनुदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। किन्तु इनकी बारह प्रकृतियोंका वह कदाचित् उदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य, रति, अरति व शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदी-रक होता है। भय व जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है।

अनन्तानुबन्धी क्रोधकी उदीरणा करनेवाला सम्यक्त्व व सम्यग्मिथ्यात्वका अनुदीरक होता है। वह मिथ्यात्वका कदाचित् उदीरक व कदाचित् अनुदीरक होता है, क्योंकि, उदया-वलीमें प्रविष्ट हुए मिथ्यात्वकी प्रथम स्थिति युक्त मिथ्यादृष्टिके और सासादनसम्यग्दृष्टिके उसका उदय सम्भव नहीं है। वह अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन इन तीन क्रोध कषायोंका नियमसे उदीरक होता है। शेष बारह कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार अनन्तानुबन्धी मान, माया और लोभके आश्रयसे कथन करना चाहिये। विशेष इतना है कि मानकी उदीरणाके समय चार मान कषायोंकी, मायाकी उदीरणाके समय चार माया कषायोंकी, और लोभकी उदीरणाके समय चार लोभ कषायोंकी नियमसे उदीरणा होती है; ऐसा कहना चाहिये।

अप्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाना तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित्

✿ काप्रतौ 'संजुलण' इति पाठः।

अणंताणुबंधिकोधस्स सिया उदीरओ, अणंताणुबंधिसेस⊗कसायाणं णियमा अणुदीरगो। पच्चक्खाणकोधस्स संजलणकोधस्स णियमा उदीरओ। सेसाणं णवण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसतिण्णं कसायाणं।

पच्चक्खाणकसायस्स कोधमुदीरेंतो तिविहं दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि। अणंताणुबंधिं पि सिया उदीरेदि, जदि उदीरेदि तो कोधं णियमा उदीरेदि, सेसतिविहअणंताणुबंधीणं णियमा अणुदीरओ। अपच्चक्खाणकसायस्स सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो णियमा कोधमुदीरेदि, तस्सेव सेसकसायाणमुदीरओ। पच्चक्खाणस्स सेसतिण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ। कोधसंजलणस्स णियमा उदीरओ, सेससंजलणाणमणुदीरगो✠। तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स णियमा उदीरओ। भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ। एवं सेसपच्चक्खाणकसायाणं वत्तव्वं।

उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धी क्रोधका कदाचित् उदीरक होता है, शेष अनन्तानुबन्धी मान आदि कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। प्रत्याख्यान क्रोध और संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होता है। अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान और संज्वलन मान, माया एवं लोभ इन शेष नौ कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर वह उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे अप्रत्याख्यान मान आदि शेष तीन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

प्रत्याख्यान कषायके क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहकी कदाचित् उदीरणा करता है। अनन्तानुबन्धीकी भी कदाचित् उदीरणा करता है। यदि उसकी उदीरणा करता है तो क्रोधकी नियमसे उदीरणा करता है। शेष तीन प्रकार अनन्तानुबन्धी कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। वह अप्रत्याख्यान कषायका कदाचित् उदीरक होता है। यदि उदीरक होता है तो नियमसे क्रोधकी उदीरणा करता है, उसीकी शेष कषायोंका वह अनुदीरक होता है। प्रत्याख्यानकी शेष तीन कषायोंका वह नियमसे अनुदीरक होता है। संज्वलन क्रोधका नियमसे उदीरक होकर वह शेष संज्वलन कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है। तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उक्त तीन वेदोंमेंसे किसी एकका नियमसे उदीरक होता है। हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर इन दो युगलोंमेंसे किसी एक युगलका नियमसे उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका वह कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकारसे मान आदि शेष प्रत्याख्यान कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

⊗ उभयोरेव प्रत्योः 'अणंताणुबंधिविसेस-' इति पाठः।

✠ उभयोरेव प्रत्योः 'सेससंजलणाणमुदीरगो' इति पाठः।

कोधसंजलणमुदीरेंतो तिविहदंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणाणं सिया उदीरओ, जदि उदीरओ तो एदेसिं कोधाण णियमा उदीरओ, सेसबारसण्णं कसायाणं णियमा अणुदीरओ । तिण्णं वेदाणं सिया उदीरओ, तिण्णं वेदाणमेक्कदरस्स वि सिया उदीरगो । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरगो, दोण्णं जुगलाणमेक्कदरस्स (वि) सिया उदीरओ*, भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवं सेसतिण्णं कसायाणं संजलणाणं वत्तव्वं ।

पुरिसवेदमुदीरेंतो दंसणमोहणीयं सिया उदीरेदि । अणंताणुबंधि-अपच्चक्खाण-पच्चक्खाणकसायाणं सिया उदीरओ । संजलणाए णियमा उदीरओ । उदीरेंतो वि सोलसण्हं कसायाणं पि सिया उदीरओ । इत्थि-णवुंसयवेदाणं णियमा अणुदीरओ । हस्स-रदि-अरदि-सोगाणं सिया उदीरओ, दोण्णं जुअलाणं पि सिया उदीरओ । भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । एवमित्थि-णवुंसयवेदाणं पि वत्तव्वं ।

हस्समुदीरेंतो रदीए णियमा उदीरओ । अरदि-सोगाणं णियमा अणुदीरओ । दंसण-तिय-सोलसकसाय-तिण्णिवेद-भय-दुगुंछाणं सिया उदीरओ । रदिमुदीरेंतो हस्सस्स☼ णियमा उदीरओ । सेसं हस्सभंगो । अरदिमुदीरेंतो सोगस्स णियमा उदीरओ । हस्स-

---

संज्वलन क्रोधकी उदीरणा करनेवाला तीन प्रकारके दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है । अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान और प्रत्याख्यान कषायोंका वह कदाचित् उदीरक होता है । यदि उदीरक होता है तो इनके क्रोधोंका नियमसे उदीरक होता हुआ शेष बारह कषायोंका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन वेदोंका कदाचित् उदीरक होकर उन तीनोंमेंसे किसी एक वेदका भी कदाचित् उदीरक होता है । हास्य-रति व अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होकर दोनों युगलोंमेंसे किसी एकका भी कदाचित् उदीरक होता है। भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार मान आदि शेष तीन संज्वलन कषायोंके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये ।

पुरुषवेदकी उदीरणा करनेवाला तीन दर्शनमोहनीयकी कदाचित् उदीरणा करता है । अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यानावरण और प्रत्याख्यानावरण कषायोंका कदाचित् उदीरक होता है । संज्वलनका नियमसे उदीरक होता है । उदीरणा करता हुआ भी वह सोलह कषायोंका भी कदाचित् उदीरक होता है । स्त्री और नपुंसक वेदोंका वह नियमसे अनुदीरक है । हास्य-रति और अरति-शोकका कदाचित् उदीरक होता हुआ दोनों युगलोंका भी कदाचित् उदीरक होता है । भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । इसी प्रकार स्त्री और नपुंसक वेदोंके आश्रयसे भी प्ररूपणा करना चाहिए ।

हास्यकी उदीरणा करनेवाला रतिका नियमसे उदीरक होता है। अरति और शोकका नियमसे अनुदीरक होता है । तीन दर्शनमोहनीय, सोलह कषाय, तीन वेद, भय और जुगुप्साका कदाचित् उदीरक होता है । रतिकी उदीरणा करनेवाला हास्यका नियमसे उदीरक होता है। शेष कथन हास्यके समान है । अरतिकी उदीरणा करनेवाला शोकका नियमसे उदीरक होता है । हास्य व

---

* प्रत्योरूभयोरेव 'णियमा उदीरओ' इति पाठः । ☼ काप्रतौ 'हस्स' ताप्रतौ 'हस्सं' इति पाठः ।

रदीणमणुदीरओ । सेसं रदिभंगो । सोगमुदीरेंतो अरदीए णियमा उदीरओ । सेसम-रदिभंगो । भयमुदीरेंतो सेससत्तावीसमोहणीयपयडीणं सिया उदीरओ । एवं दुगुंछाए ।

णिरयाउअमुदीरेंतो सेसआउआणं णियमा अणुदीरओ । एवं सेसआउआणं वत्तव्वं ।

णिरयगइमुदीरेंतो णियमा सेसगईणमणुदीरओ । एवं सेसतिण्णं गईणं वत्तव्वं । एइंदियजादिमुदीरेंतो सेसजादीणं णियमा अनुदीरओ । एवं चदुण्णं जादीणं वत्तव्वं । ओरालियसरीरमुदीरेंतो वेउव्वियसरीर-आहारसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइय-सरीराणं णियमा उदीरओ । वेउव्वियसरीरमुदीरेंतो ओरालिय-आहार-सरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ । आहासरीर-मुदीरेंतो ओरालियवेउव्वियसरीराणं णियमा अणुदीरओ, तेजा-कम्मइयसरीराणं णियमा उदीरओ ।

अण्णदरसंठाणमुदीरेंतो सेससंठाणाणं णियमा अणुदीरओ । एवं छण्णं संघडणाणं वत्तव्वं । एवं चेवाणुपुव्वी-तस-थावर-बादर-सुहुम-पज्जत्तापज्जत्त--पसत्थापसत्थाविहायगइ--सुभग-दुभग-सुस्सर--दुस्सर-आदेज्ज--अणादेज्ज-जसगित्ति-अजसगित्तीणं वत्तव्वं । तिण्णमंगोवंगाणं तिसरीरभंगो । वण्ण---गंध--रस--फासाणं सगभेदेसु अण्णदरमुदीरेंतो सेसाणं सिया

रतिका अनुदीरक होता है। शेष कथन रतिके समान है। शोककी उदीरणा करनेवाला अरतिका नियमसे उदीरक होता है। शेष कथन अरतिके समान है। भयकी उदीरणा करनेवाला शेष सत्ताईस मोहनीय प्रकृतियोंका कदाचित् उदीरक होता है। इसी प्रकार जुगुप्साके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये।

नारक आयुकी उदीरणा करनेवाला शेष आयु कर्मोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष आयु कर्मोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये।

नरकगतिकी उदीरणा करनेवाला नियमसे शेष गतियोंका अनुदीरक होता है। इसी प्रकार शेष तीन गतियोंका आश्रय कर प्ररूपणा करना चाहिये। एकेन्द्रिय जातिकी उदीरणा करनेवाला शेष जतियोंका नियमसे अनुउदीरक होता है। इसी प्रकार शेष चार जातियोंका आश्रय करके प्ररूपणा करना चाहिये। औदारिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला वैक्रियिकशरीर और आहारक शरीरका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस और कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है। वैक्रियिकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और आहारक शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है। आहारकशरीरकी उदीरणा करनेवाला औदारिक और वैक्रिय शरीरोंका नियमसे अनुदीरक तथा तैजस व कार्मण शरीरोंका नियमसे उदीरक होता है।

अन्यतर संस्थानकी उदीरणा करनेवाला शेष संस्थानोंका नियमसे अनुदीरक होता है। इसी प्रकार छह संहननोंके आश्रयसे कथन करना चाहिये। इसी प्रकारसे ही आनुपूर्वी, त्रस, स्थावर, बादर, सूक्ष्म, पर्याप्त, अपर्याप्त, प्रशस्त व अप्रशस्त विहायोगति, सुभग, दुर्भग, सुस्वर, दुस्वर, आदेय, अनादेय, यशकीर्ति और अयशकीर्तिके आश्रयसे प्ररूपणा करना चाहिये। तीन अंगोपांगोंकी प्ररूपणा तीन शरीरोंके समान है। वर्ण, गन्ध, रस व स्पर्शके अपने भेदोंमेंसे

उदीरओ, विरोहाभावादो । आदावमुदीरेंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ, उज्जोवमुदीरेंतो आदावस्स णियमा अणुदीरओ । णिरयगइ-मणुसगईओ वेदंतो उज्जोवस्स णियमा अणुदीरओ । देवगइं वेदंतो मूलसरीरेण उज्जोवस्स अणुदीरओ । आदावस्स पुढविजीवो चेव अदीरगो, ण अण्णो ।

उच्चगोदमुदीरेंतो णीचागोदस्स णियमा अणुदीरगो । एवं णीचागोदस्स । सेसं जाणियूण वत्तव्वं । एवं सत्थाणसण्णियासो समत्तो । परत्थाणसण्णियासो जाणियूण वत्तव्वो । एवं सण्णियासो समत्तो ।

अप्पाबहुअं दुविहं-- सत्थाणप्पाबहुअं परत्थाणप्पाबहुअं चेदि । सत्थाणे पयदं-पंचविहस्स णाणावरणस्स तुल्ला उदीरया । थीणगिद्धीए उदीरया✱ थोवा । णिद्दाणिद्दाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलापयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, णिद्दाए उदीरया संखेज्जगुणा, पयलाए उदीरया संखेज्जगुणा, सेसचदुण्णं दंसणावरणीया-- णमुदीरया तुल्ला संखेज्जगुणा ।

सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया संखेज्जगुणा । णिरयगईए सादस्स उदीरया थोवा, असादस्स उदीरया असंखेज्जगुणा । सेसेसु तसेसु असादस्स उदीरया

किसी एककी उदीरणा करनेवाला शेष भेदोंका कदाचित् उदीरक होता है, क्योंकि, इसमें कोई विरोध नहीं है । आतपकी उदीरणा करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक और उद्योतकी उदीरणा करनेवाला आतपका नियमसे अनुदीरक होता है । नरकगति व मनुष्यगतिका वेदन करनेवाला उद्योतका नियमसे अनुदीरक होता है । वेवगतिका वेदन करनेवाला मूल शरीरसे उद्योतका अनुदीरक होता है । आतपका उदीरक पृथिवीकायिक जीव ही होता है, अन्य नहीं होता ।

उच्चगोत्रकी उदीरणा करनेवाला नीचगोत्रका नियमसे अनुदीरक होता है । इसी प्रकार नीचगोत्रके आश्रयसे कहना चाहिये । शेष कथन जानकर करना चाहिये । इस प्रकार स्वस्थान संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

परस्थान संनिकर्षकी प्ररूपणा जानकर करना चाहिये । इस प्रकार संनिकर्ष समाप्त हुआ ।

अल्पबहुत्व दो प्रकार है-- स्वस्थान अल्पबहुत्व और परस्थान अल्पबहुत्व । इनमें स्वस्थान अल्पबहुत्व प्रकृत है--पांच प्रकार ज्ञानावरणकी उदीरणा करनेवाले परस्परमें समान हैं । स्त्यानगृद्धिके उदीरक जीव स्तोक हैं, उनसे निद्रानिद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाप्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे निद्राके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे प्रचलाके उदीरक संख्यातगुणे हैं, उनसे शेष चार दर्शनावरणीय प्रकृतियोंके उदीरक परस्परमें तुल्य होकर संख्यातगुणे हैं ।

सातावेदनीयके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे संख्यातगुणे हैं । नरकगतिमें साताके उदीरक स्तोक हैं, असाताके उदीरक उनसे असंख्यातगुणे हैं । शेष त्रस जीवोंमें

✱ का.प्रतौ ' उदीरए ' इति पाठः ।